IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संस्कार निर्माण में श्रीमद्भगवद् गीता की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भूमिका

निर्देशक

डॉ. विकास सैनी

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

आईएएसई.मानित विश्वविद्यालय, सरदारशहर

प्रस्तुतकर्ता

तुलसीराम कुमावत

पीएच. डी शोधार्थी

(शिक्षा)

सरांशः—

भारतीय संस्कृति में संस्कार जीवन के सिद्धान्त है। संस्कार मनुष्य को केवल सामाजिक प्राणी नहीं बनाते, बल्कि उसे नैतिक, आध्यात्मिक और विवेकशील जीवन की ओर दर्शाता है। श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय जीवन दर्शन का अमूल्य निधि है, जो मानव मात्र के लिए मार्गदर्शक है। आज के युग में जब मूल्य संकट, नैतिक तनाव, भौतिकतावादी दृष्टिकोण और जीवन की आपाधापी से व्यक्ति प्रभावित होता है, तब गीता का संस्कार दर्शन और भी कारक हो जाता है। शोध में गीता के ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, तथा ध्यानयोग को संस्कार निर्माण के प्रमुख आधार के रूप में विवेचित किया गया है। इन योगो के माध्यम से सत्यनिष्ठा, आत्मसंयम, निष्काम कर्म, सेवा भाव, समर्पण तथा आत्मज्ञान जैसे गुणों का विकास संभव है। वर्तमान भौतिकतावादी आलंकारिक जीवन में गीता के संस्कार अत्यंत विहिन है क्योंकि ये शिक्षा प्रणाली, समाज और व्यक्तित्व विकास में नैतिक विचारधारा को स्थापित करते है।

मुख्य शब्द :— भगवद्गीता, संस्कार निर्माण, कर्मयोग, भक्ति, आत्मज्ञान।

उद्देश्य :—

(अ) श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार संस्कार निर्माण के प्रमुख आधारों का अध्ययन करना।

(ब) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

(स) श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार संस्कार निर्माण के प्रमुख आयामों का अध्ययन करना।

(द) श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार संस्कार निर्माण के महत्व का अध्ययन करना।

1. भूमिका :–

भारतीय संस्कृति में संस्कार का विशेष महत्व है। संस्कार मनुष्य के व्यक्तित्व, आचरण और जीवन मूल्यों को आकार देते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि जीवन दर्शन और व्यवहार विज्ञान का अमूल्य मूल्य है। गीता का मुख्य उद्देश्य मानव को कर्तव्य पथ पर स्थापित कर उसके व्यक्तित्व एवं संस्कारों का परिशोधन करना है।

2. संस्कार का अर्थ और महत्व :–

संस्कार त्र ''सम्यक्. कार – मनुष्य का शुद्धिकरण और उत्थान। गीता के अनुसार संस्कार केवल कर्मकाण्ड नही, बल्कि जीवन के प्रत्येक कर्म में शुद्ध दृष्टिकोण है। संस्कार व्यक्ति को आत्मानुशासन, कर्तव्यपरायणता और नैतिकता की ओर ले जाते है।

3. गीता में संस्कार निर्माण के आधार :–

(क) ज्ञानयोगः

- आत्मा की अमरता और स्थिरता का ज्ञान ।
- विवेक और सम्यक दृष्टि से जीवन को देखने की क्षमता।
- अर्जुन का मोह निवारण ज्ञान के माध्यम से हुआ।

(ख) कर्मयोगः

- ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''– निष्काम कर्म का उपदेश ।
- समाजहित और लोकसंग्रह की भावना का विकास।
- कर्तव्यपरायणता और कार्य के प्रति निष्ठा।

(ग) भक्तियोगः

- ईश्वर के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव।
- सहिष्णुता, दया, करूणा और आस्था का विकास।

(घ) ध्यानयोगः

- मन और इन्द्रियों का संयम ।
- मानसिक शांति और आत्मबल का संवर्धन।

4. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता की प्रासंगिकता :–

1. **शिक्षा क्षेत्र में**– गीता के मूल्य आधारित संस्कार छात्रों में चरित्र निर्माण, आत्मनियन्त्रण और नेतृत्व क्षमता विकसित करते है।
2. **समाज में**– गीता लोकसंग्रह और सहयोग की भावना को जागृत कर सामाजिक समरसता स्थापित करती है।
3. **राजनीति और प्रशासन में**– निष्काम कर्म और कर्तव्यनिष्ठा के संस्कार सुशासन के लिए आवश्यक है।
4. **आधुनिक जीवन में** – तनाव और प्रतिस्पर्धा से भरे वातावरण में गीता ध्यान, भक्ति, और आत्मज्ञान के माध्यम से मानसिक शांति प्रदान करती है।

5. संस्कार निर्माण के प्रमुख आयाम :–

- नैतिक संस्कार– सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम ।
- सामाजिक संस्कार – सेवा भाव , समानता, लोकहित ।
- आध्यात्मिक संस्कार – भक्ति, ध्यान, आत्मज्ञान।
- व्यावहारिक संस्कार – परिश्रम, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा।

6 निष्कर्ष :

गीता का संदेश केवल अर्जुन तक सीमित नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए है। आज के भौतिकवादी और मूल्य–विहिन वातावरण में गीता संस्कार निर्माण का अमृत प्रदान करती है। यदि गीता के उपदेशों को शिक्षा, समाज, राजनीति और व्यक्तिगत जीवन में व्यवहारिक रूप से अपनाया जाए, तो संतुलित व्यक्तित्व, आदर्श नागरिक और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है।

7. संदर्भ

1. श्रीमद्भगवद्गीता – स्वामीरामसुखदासजी टीका।
2. लोकमान्य तिलक – गीता रहस्य।
3. स्वामी विवेकानन्द – गीता पर व्याख्यान ।
4. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन– जीम ठींहंअंक ळपजं
5. डॉ. भगवती प्रसाद शर्मा – गीता का नैतिक दर्शन।